

3- व्याप्ति की सिद्धि शब्द प्रमाण से नहीं-

चार्वाक मतानुसार व्याप्ति की

सिद्धि शब्द प्रमाण से भी नहीं की जा सकती क्योंकि शब्द स्वयं प्रमाण नहीं हैं। इसकी प्रामाणिकता स्वयं अनुमान पर निर्भर है। अतः व्याप्ति की सिद्धि शब्द के आधार पर करने पर बहुल दोष आ जाता है।

पुनः कोई भी व्यक्ति अपने आप अनुमान नहीं कर पायेगा। उसे

सदैव किसी विश्वसनीय व्यक्ति के वचनों पर आश्रित रहना पड़ेगा।

4- व्याप्ति की सिद्धि कारणता सिद्धांत से नहीं-

व्याप्ति की सिद्धि कारण

कार्य के व्यापक संबंध के आधार पर नहीं की जा सकती, क्योंकि कारणता संबंध स्वयं एक प्रकार की व्याप्ति है। ऐसा करने पर पुनः यहाँ बहुल दोष की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

5- व्याप्ति की सिद्धि सामान्यगत से भी नहीं-

चार्वाक मतानुसार व्याप्ति

को सामान्यगत भी नहीं माना जा सकता। जैसा कि न्याय दर्शन स्वीकार करता है। चार्वाक मतानुसार प्रत्यक्ष सदैव घटना विशेषों का होते हैं, सामान्य का नहीं। हमें कभी भी धूमत्व & अग्नेत्व के सामान्य संबंध का प्रत्यक्ष नहीं होता। व्याप्ति को सामान्यगत मानने पर आत्मश्रय की कल्पना होती है। ऐसी स्थिति में अनुमान का स्वरूप होगा -

१) वहाँ जहाँ धूम है, वहाँ अग्नि है।

२) धूमित घर में अग्नि है।

३) धूमित घर में अग्नि का प्रमाण है।

यहाँ धूम अग्नि के आधार कारण में पहले से ही स्वकीय

कर लिया गया है।

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि व्याप्ति की सिद्धि किसी भी प्रकार से नहीं की जा सकती। अतः इस पर आधारित अनुमान को भी प्रमाण के रूप में स्वीकार नहीं किया जा सकता।

चार्वाक के अनुसार अनुमान एक निराक्ष मनीषैयानिक क्रिया है। इसमें कोई तार्किक अविद्यता नहीं है। यह अनुभव द्वारा हमारे मन में स्थापित हो जाने वाले साधुत्व का प्रमाण है। निश्चित & अमान्य ज्ञान प्रदान करना इसका स्वामाविक लक्षण नहीं है। यद्यपि कि यह कभी-2 सत्य हो जाता है। पाश्चात्य दर्शन में ह्यूम ने भी अनुमान के खण्डन के क्रम में इसके समरूप तर्क प्रस्तुत किये हैं। \*